

nung AK. 3, 3, 10. H. 319. Suçr. 1, 34, 17. 169, 10. 331, 18. 2, 214, 12. Buāg. P. 5, 24, 13. प्रातस्य ते — नाशयिष्याम्यहं क्लामम् N. 9, 28. न शीतोक्षेन च क्लामः Arā. 4, 47. न च मे मनसि क्लामः R. 5, 49, 10. क्लमापहं Suçr. 4, 192, 21. मर्गेणाधक्लामच्छिद्रा Vid. 33. क्लामविनोदिन् Çāk. 69. विनोदितदिनक्लाम Çiç. 4, 66. गतक्लाम M. 7, 225. गतक्लामा N. 11, 1. MBu. 13, 5862. 15, 912. R. 2, 24, 31. 3, 3, 22. विगतक्लाम M. 7, 151. विगतक्लामा MBu. 2, 83. 15, 686. त्रितक्लाम Hip. 1, 52. वपुः तपःक्लामम् schlechte Lesart für तपःक्लामम् Çāk. 17, 1. l.

क्लामय (wie eben) m. dass. AK. 3, 3, 10. Vjutr. 170.

क्लामिन् (wie eben) adj. müde werdend, erschlaffend gaṇa शमादि zu P. 3, 2, 141.

क्लान्, क्लान्ते sich fürchten Duātup. 19, 13, Zusatz des Vop.

— वि in Verwirrung gerathen: मित्त्याप्नु ग्रीमूता विक्लवन्ते दिवि प्रहः Mādu. im Duātup. 33, 84. Vgl. विक्लव.

क्लान्ति (von क्लाम्) f. = क्लाम BHART. 1, 36.

क्लिद्, क्लियति (med. s. u. प्र) feucht werden Duātup. 26, 132. तेन क्लियति हि व्रणः Suçr. 2, 23, 12. मुखेण पुरुषं दृष्ट्वा धातरं यदि वा सुतम्। योनिः क्लियति नारीणाम् (vgl. u. प्र) Hit. I, 110. नुयति भूमी क्लियति वान्धवा मे BHART. 18, 11. partic. क्लिन्न feucht geworden, feucht AK. 3, 2, 55. H. 1492. अन्नेः क्लिन्नमुराऽभवत् MBu. 1, 5359. क्लिन्नाम्भसि 3, 11078 (p. 572). तया क्लिन्नमिदं भस्म गङ्गाया R. 1, 42, 20. 3, 33, 9. Daç. 1, 16. Suçr. 1, 138, 15. 2, 309, 8 (क्लिन्नव 5). PANKAT. 238, 24. Çāk. 166. BHART. 2, 9. H. 679. trüfend, von den Augen P. 5, 2, 33. Vārtt. 2. H. 461, Sch. AK. 2, 6, 2, 11. क्लिन्नात ebend. क्लिन्नेत्र H. 461. von Thränen feucht, mit-leidig (vgl. आर्द्र): क्लिन्नधिपं च मातरम् Bhāg. P. 4, 3, 10. 9, 11, 5. — caus. क्लेदयति befeuchten: न चैनं क्लेदयन्त्यापः BHAG. 2, 23. Suçr. 1, 19, 17. 337, 2. रक्तीरिक्लिद्गूमिम् BHART. 13, 48.

— अय स. अयक्लेद.

— आ स. आक्लेद.

— समा, partic. समान्क्लिन्न feucht, nass so v. a. aus Mitleid darge-reicht: दशकल्पयुतानिहं न कीयते युधिष्ठिर। जीवनाय समान्क्लिन्नं वसु दत्त्वा महीयते ॥ MBu. 3, 13172.

— उद् स. उत्क्लेद fg.

— परि, partic. परिक्लिन्न über und über feucht, — nass: तीर्थोदकापरिक्लिन्न (मुनि) R. 1, 48, 24. अयस्यायं 3, 22, 22. मुखमश्रु 4, 6, 16. 6, 101, 4. शोणिताम्बु 5, 83, 14.

— प्र med. feucht werden: दृष्ट्वैव पुरुषं क्लृप्यं योनिः प्रक्लिद्यते त्रिव्याः (vgl. unter dem simpl.) MBu. 13, 2227. प्रक्लिद्यते यदा स्वेदात् Suçr. 1, 297, 17. partic. प्रक्लिन्न feucht geworden, feucht: अयस्यायनिपातेन किंचित्प्रक्लिन्नशब्दला (भूमिः) R. 3, 22, 21. तल 3, 20, 7. 259, 8. 266, 17. प्रक्लिन्नकाय 2, 253, 19. (प्रक्लिन्नव 348, 15). feucht und von Mitleid bewegt: प्रेम्णा प्रक्लिन्नहृदयेतणाः Bhāg. P. 9, 10, 39. — caus. act. befeuchten Suçr. 1, 68, 4.

— वि, partic. विक्लिन्न durchnässt, erweicht H. an. 3, 415. MED. n. 131. वर्षाम्बुविक्लिन्नं पद्ममालितं यथा MBu. 1, 5412. auseinandergefallen (शीर्षा); alt H. an. MED. — Vgl. विक्लेद.

— सम्, partic. संक्लिन्न befeuchtet, erweicht: मेदसा संक्लिन्ना GRUBJA-SANĠR. 1, 61. MRĠKH. 92, 7.

क्लिध s. विक्लिध.

क्लिन्द, क्लिन्दति und क्लिन्दन्ते wehklagen Duātup. 3, 36, 2, 14. — Vgl. क्लन्द, क्लन्द.

क्लिन्नवर्त्मन् (क्लिन्न + वर्त्) n. eine best. Krankheit des Augenlids Suçr. 2, 309, 9.

क्लिप् (v. l. कृप्) VS. 40, 15. ÇAT. Br. 14, 8, 3, 1: ओङ्क्लतो स्मर क्लिप्ते (Sā.: = कृताय लोकाय) स्मरामि; viell. Gelingen (vgl. कल्प).

क्लिप् 1) क्लिप्नोति Duātup. 31, 50; चिक्लेजः क्लिशिवा und क्लिप्ता P. 1, 2, 7. 7, 2, 50. Vop. 26, 103. 204. 208; a) plagen, quälen, belästigen, Beschwerde machen; mit dem acc. der Person: अयं मां मुदुक्लम् — क्लिप्नोति नाहं तत्सोढुं चिरं शन्यामि MBu. 2, 2351. (अमुरः) मुरान्पोश्च क्लिप्नोति 13, 4015. Suçr. 2, 181, 20. KUMĀRAS. 2, 40. (मरुतः) चिक्लिशनुश्रुतया वज्रविनीमुत्तदा इव नदीरयाः स्थलीम् Ragh. 11, 58. क्लिप्नोति नन्धय-रियालनवृत्तिरेव Çāk. 103. — b) leiden, Beschwerde empfinden: न क्लिप्नोतिः BHART. 18, 31. नृपात्मनो चिक्लिशतुः 3, 31. चिरं क्लिशिता (kann auch zu 2. gezogen werden) 5, 52. — 2) क्लिष्यते geplagt —, gequält werden, sich quälen, Beschwerde empfinden, leiden Duātup. 26, 52. व-त्कृते क्लिष्यते त्रैः MBu. 2, 2255. 3, 2581. R. 6, 99, 28. मशत्यः क्लिष्यते प्राणैर्विशल्या विनशिष्यति 2, 63, 44. इन्द्रियैः कामवृत्तैस्त्वं क्लिष्यसे प्रा-कृतो यथा 4, 16, 27. वन्धिये सेतुना गङ्गा मुखः पन्था भविष्यति। क्लिष्यते हि वनस्तात तरमाणाः पुनः पुनः ॥ MBu. 3, 10727. 13235. किमर्थं क्लिष्यसे भद्रे BENF. Chr. 46, 30. Hit. I, 23. क्लिष्यमान MBu. 1, 6023. एवं क्लेषैः मुक्लुभिः क्लिष्यमाना 3, 377. R. 2, 39, 5. 5, 44, 15. Ausnahmsweise auch act.: त्रयः पर्यर्थं क्लिष्यति मातिणाः प्रतिः कुलम् M. 8, 169. MBu. 3, 10241. क्लिष्यतो (acc. pl.) ऽनर्हान् 60. Das act. mit transit. Bed. Schmerz berei-ten: क्लिष्यन्निवास्य भुवनम्यमुरः स्थलेन Ragh. 13, 73. — 3) partic. क्लि-शित (nicht zu belegen) und क्लिष्ट P. 7, 2, 50. Vop. 26, 103. 104. AK. 3, 2, 48. a) geplagt, gequält, belästigt, in einen leidenden Zustand ver- setzt: मनसितरुता क्लिष्टम्यैवं समागममायया MĀLAV. 69. मदनक्लिष्टा Çāk. 58. क्लिष्टाश्च व्यथिताश्चात्मनस्तताः परमपर्यः R. 3, 38, 15. PANKAT. III, 238. जीवितुं नार्ह्य क्लिष्टम् (adv. in Noth) Bhāg. P. 1, 9, 12. अक्लि-ष्टकारिन् der ohne Leiden zu empfinden handelt, dem Alles leicht von der Hand geht MBu. 3, 1706. 1765. R. 1, 77, 19. 3, 31, 1. 5, 6, 13. 6, 86, 36. अक्लिष्टभाव der Zustand eines Nichtbedrängten, von allen Leiden Freien 5, 1, 61. — b) mitgenommen, verletzt, verschert, in einen schlechten Zustand versetzt, abgenutzt, verbraucht, zu Schanden gemacht: क्लिष्टमात्यभ-रणा R. 3, 58, 12. अक्लिष्टमात्यभरणा 5, 103, 4. क्लिष्टं वासम् Suçr. 2, 137, 8. स्पर्शक्लिष्टम् — एकवेणीम् MEGH. 89. घामर्दक्लिष्टकेशम् (सिंहशिशुम्) Çāk. 173. अक्लिष्टवालतरुपद्मव 147. क्लिष्टं नु तावत्कलनेव पुण्यम् 137. त्रपमक्लिष्टकाति 113. इन्द्रोः — वदनुमरणक्लिष्टकातेः MEGH. 92. अक्लि-ष्टव्रत R. 1, 34, 1. तस्या वचनमक्लिष्टं मत्पमेव 38, 6. sich widersprechend (von einer Rede) AK. 1, 1, 5, 20. H. 263. — c) mit Beschwerden —, mit Leiden verbunden: कृषिः क्लिष्टा PANKAT. I, 12. क्लिष्टवृत्ति ein kümmer-liches Leben führend KATHĀS. 3, 14. अक्लिष्टकर्मन् (vgl. अक्लिष्टकारिन् unter a.) dessen Thaten nicht mit Beschwerden verbunden sind, dem Alles leicht von der Hand geht R. 1, 34, 17. — caus. क्लेशयति plagen, quälen Suçr. 1, 282, 16. 2, 189, 3. मा माति चिक्लिशः BHART. 6, 17. med. Suçr. 2, 254, 2. क्लेशयितुम् R. 5, 27, 33. क्लेशित = क्लिष्ट a. MBu. 3, 10872.